Date: 22/04/2020
Sima Kumari
Dept. of ECO.

B.A Part 1, ECONOMICS (HONS + Subsidiary)
Paper - II

The Quantity Theory Of Money (Fisherian Approach or the transaction Approach)

मुद्रा का परिमाण सिद्धांत (फिशर का दृष्टिकोण अथवा आदान-प्रदान दृष्टिकोण)

Historical View:- मुद्रा के मूल्य-निर्धारण से संबंधित यह सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण और पुराना है क्योंकि अति प्राचीन काल से ही अर्थशास्त्रियों द्वारा इसका समर्थन किया गया है। मुद्रा के परिमाण सिद्धांत का आविष्कार किसने किया, यह पता लगाना कठिन है। प्रो० मार्गेट ने अपनी पुस्तक "Theory of Price" में बताया है कि मुद्रा के परिमाण सिद्धांत का प्रतिपादन 15 वीं शताब्दी में हुआ है। वैसे यह माना जाता है कि शुद्ध रूप से इस सिद्धांत का प्रतिपादन 16वीं सदी में "डेविड नेटी" ने किया था और "जॉन लॉक तथा डेविड ह्यूम" ने इसका विकास किया था। इसके बाद एडम स्मिथ, रिकार्डो, जे० एस० मिल ने भी अपने-2 विचार व्यक्त किये। ★ फिशर व कैनर ने इस सिद्धांत का विस्तृत रूप से वर्णन किया। वर्तमान में मिल्टन फ्रीडमैन ने इस सिद्धांत को एक नया स्वरूप दिया। लेकिन परिष्कृत रूप में अर्थशास्त्रियों ने परिमाण सिद्धांत की व्याख्या 2 महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से की है →

(1) फिशर का आदान-प्रदान दृष्टिकोण (Fisherian Transaction Approach)

(2) मुद्रा संचयन दृष्टिकोण (Cash-Balance Approach)

Scanned with CamScanner

फिशर का मुद्रा का परिमाण सिद्धांत
(Fisherian Quantity theory of Money or Transaction Approach)

Introduction:—

मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के आदान-प्रदान दृष्टिकोण का प्रतिपादन सन 1911 में प्रसिद्ध अमेरिकन अर्थशास्त्री प्रो० इरविंग फिशर ने किया था। इसलिए इसे फिशर का मुद्रा सिद्धांत भी कहते हैं। मुद्रा का परिमाण सिद्धांत बताता है कि "मुद्रा का परिमाण ही कीमत स्तर (Price level) अथवा मुद्रा के मूल्य का निर्धारक है। यदि मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन होगा तो वह ठीक उसी अनुपात में कीमत-स्तर में परिवर्तन ला देगा।" इस सिद्धांत की कुछ निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई हैं ⟶

Definition:

प्रो० फिशर के शब्दों में, "यदि अन्य चीजें अपरिवर्तित रहें तो, ज्यों-2 मुद्रा चलन की मात्रा बढ़ती है, त्यों-2 कीमत स्तर भी प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है और मुद्रा का मूल्य घटता जाता है और विलोमशः भी।"

Acc. to Fisher, "Other things remaining unchanged, as the quantity of money in circulation increases, the price level also increases in direct proportion and the value of money decreases and vice versa."

Acc. to Prof. Taussing, "Double the quantity of money and other things being equal, prices will be twice as high

as before and the value of Money one half."

इस प्रकार, यदि मुद्रा की मात्रा दुगुनी कर दी जाए तो कीमत स्तर भी दुगुना हो जाएगा और मुद्रा का मूल्य आधा रह जाएगा। दूसरी ओर, मुद्रा की मात्रा घटाकर आधी कर दी जाए तो कीमत-स्तर भी गिरकर आधा रह जाएगा और मुद्रा का मूल्य दुगुना हो जाएगा।

Explanation of the Definition:-
(परिभाषा की व्याख्या):

जिस प्रकार किसी वस्तु का मूल्य उस वस्तु की माँग एवं पूर्ति पर निर्भर करता है, उसी प्रकार, मुद्रा का मूल्य भी मुद्रा की माँग (Demand) एवं पूर्ति (Supply) पर निर्भर करता है लेकिन इनके बीच अंतर सिर्फ इतना है कि मुद्रा के Price में परिवर्तन सभी वस्तुओं के मूल्य को प्रभावित करता है। यदि Demand of Money, Suply से बढ़ जाए तो Value of Money बढ़ जाएगा यानि सामान्य मूल्य-स्तर (General Price level) कम हो जाएगा।

Equation of the Quantity theory of Money:-

सरलता के लिए अर्थशास्त्रियों ने शुरु से ही इसे बीजगणित के सूत्र के रूप में व्यक्त किया है सामान्यतया इसके 2 मुख्य रूप हैं।

(1) समीकरण का प्रारंभिक रूप
(2) प्रो० फिशर का समीकरण

(1) समीकरण का प्रारंभिक रूप :—

(A) $P = \frac{M}{T}$ जिसमें, M = देश में प्रचलित मुद्रा की मात्रा
T = उस समय देश में वस्तु व सेवाओं की मात्रा
P = वस्तुओं व सेवाओं का सामान्य Price level
इस सूत्र में T स्थिर माना जाता है। साथ ही मुद्रा के Quantity और Price level दोनों में सीधा व आनुपातिक संबंध होता है।

(B) $P = \frac{MV}{T}$ जिसमें V = मुद्रा की चलन गति
आजकल साख मुद्रा भी विनिमय के माध्यम का कार्य करती है लेकिन उपर्युक्त सूत्र में साख मुद्रा व उसकी चलन गति को ध्यान में नहीं रखा गया है। इसलिए यह समीकरण भी दोषपूर्ण है।

(2) फिशर का समीकरण :—

Demand & Supply के इस संबंध को, फिशर ने एक समीकरण के रूप में व्यक्त किया है।
फिशर द्वारा दिये गये समीकरण के 2 अंग हैं।
(a) पहला कुल क्रय - विक्रय की गई राशि या वस्तुओं व सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है।
(b) दूसरा अंग संपूर्ण मौद्रिक व्यय को बतलाता है।

(a) फिशर के इस विनिमय समीकरण में,
★ Equation → $MV = PT$ या $P = \frac{MV}{T}$ जहाँ [Total Supply = Total Demand, $MV = PT$]
M = मुद्रा की कुल मात्रा (Total quantity of money)
P = कीमत - स्तर (Price level)
V = मुद्रा का प्रचलन वेग (Velocity of Circulation in Money)
T = मुद्रा द्वारा किया गया लेन-देन (Transaction) या विनिमय की गई कुल वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा

Scanned with CamScanner

(b) प्रो० फिशर ने उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए समीकरण का एक दूसरा संवर्द्धित रूप दिया है। यह समीकरण संपूर्ण मौद्रिक व्यय को बतलाता है जिसे मुद्रा की संपूर्ण राशि में इनके औसत भ्रमण प्रवाह से गुणा करने पर प्राप्त किया जाता है। इसे M'V' के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

$P = \frac{MV + M'V'}{T}$ जहाँ, M = प्रचलित मुद्रा की मात्रा

V = मुद्रा की चलन गति,

M' = साख मुद्रा की मात्रा (Credit Instruments)

V' = साख मुद्रा की चलन गति, P = सामान्य मूल्य स्तर

T = प्रचलन वेग में कुल वस्तुएँ/सेवाएँ

P = (कुल वास्तविक मुद्रा × चलन गति + कुल साख मुद्रा × चलन गति) / समस्त व्यापारिक लेनदेन

$P = \frac{MV - M'V'}{T}$

फिशर के समीकरण का स्पष्टीकरण :–

(1) कुल मुद्रा का माँग पक्ष (P,T) → economy में उपलब्ध कुल वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा T को सामान्य मूल्य स्तर से गुणा करके मुद्रा की कुल मात्रा मालूम की जाती है।

अल्पकाल में वस्तु व सेवाओं की कुल उपलब्धि परिवर्तित नहीं होती। अतः T निष्क्रिय / स्थिर रहता है। P निष्क्रिय घटक है।

(2) मुद्रा की कुल पूर्ति (MV + M'V') → फिशर के समीकरण में चलन मुद्रा (M), चलन मुद्रा का चलन वेग (V), साख मुद्रा (M'), साख मुद्रा प्रचलन वेग (V') मुद्रा की पूर्ति के विभिन्न अंग हैं।

Scanned with CamScanner

फिशर ने V एवं V' को स्थिर माना है तथा M व M' के बीच एक स्थिर अनुपात को स्वीकारा है।

(3) मुद्रा मूल्य का निर्धारण → फिशर के समीकरण में V, V', M, तथा M' को स्थिर माना गया है तथा P निष्क्रिय घटक है। अतः ऐसी परिस्थिति में सामान्य कीमत स्तर (General price level) तथा मुद्रा की मात्रा (Quantity of Money) के बीच प्रत्यक्ष एवं आनुपातिक सम्बन्ध होता है। यह समीकरण इसे ही स्पष्ट करता है।

सिद्धांत का चित्र द्वारा स्पष्टीकरण →

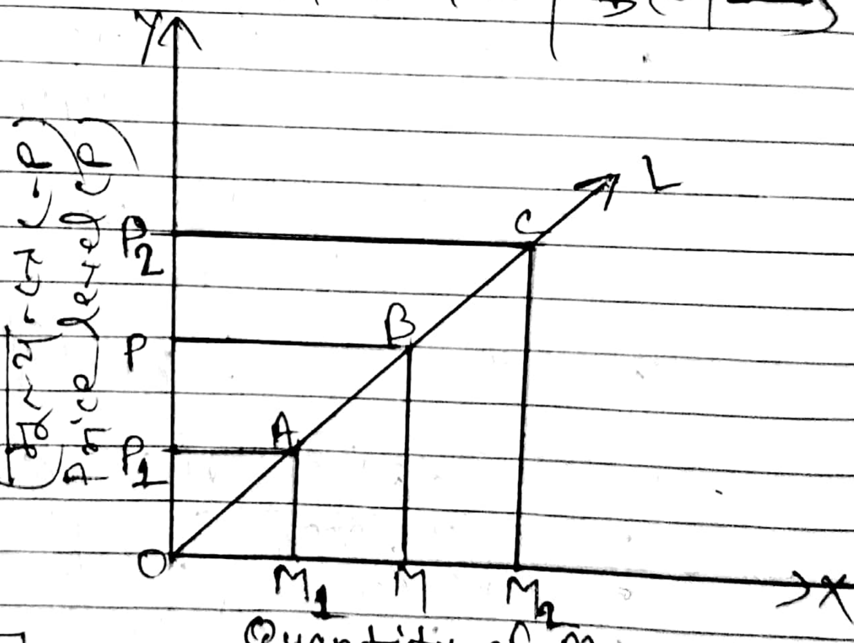

Explanation → संलग्न चित्र में प्रचलित मुद्रा की मात्रा (M) OX रेखा पर तथा कीमत स्तर (P) को OY रेखा पर दर्शाया गया है। मुद्रा की मात्रा OM_1 होने पर कीमत स्तर OP_1 है। जब मुद्रा की मात्रा बढ़कर OM_2 हो जाती है तो कीमत स्तर भी उतना ही बढ़कर OP_2 के बराबर हो जाता है। मुद्रा की मात्रा कम होने पर कीमत स्तर भी कम हो जाता है क्योंकि OM मुद्रा की मात्रा होने पर कीमत स्तर OP हो जाता है। A, B तथा C बिन्दुओं को मिला देने पर हमें OL वह रेखा प्राप्त होती है जो मुद्रा की मात्रा तथा कीमत स्तर में परिवर्तनों के पारस्परिक सम्बन्ध व्यक्त करती है।

Scanned with CamScanner

Assumptions of Fisherian Theory
(फिशर के सिद्धांत की मान्यताऐं):—

फिशर का यह सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है →

(1) विनिमय के समीकरण में P एक निष्क्रिय साधन है जो अन्य साधनों से प्रभावित होता है।
(2) M से M1 का अनुपात स्थिर रहता है।
(3) यह भी मान लिया गया है कि V तथा V' स्थिर है और M तथा M1 में होने वाले परिवर्तनों से स्वतंत्र रहते हैं।
(4) T भी स्थिर है और यह अन्य साधनों M, M', तथा V, V' से स्वतंत्र रहता है।
(5) यह मान लिया गया है कि मुद्रा की माँग लेन-देन के मूल्यों के समानुपाती है।
(6) मुद्रा की पूर्ति को भी बहिर्जात रूप से निर्धारित स्थिरांक मान लिया गया है।
(7) यह सिद्धांत दीर्घविधि में ही लागू होता है।
(8) अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की मान्यता पर based है।

Criticisms of the Fisherian Version.
(फिशर के सिद्धांत की आलोचनाऐं):—

आधुनिक अर्थशास्त्री न तो मुद्रा के परिमाण सिद्धांत की मान्यताओं में विश्वास करते हैं और न ही इसकी व्यवहारिक उपयोगिता में ही। फिशर के इस सिद्धांत की निम्नलिखित आलोचनाऐं की जाती हैं →

Scanned with CamScanner

(1) स्वयंसिद्ध (Truism) → केन्स के अनुसार, मुद्रा का परिमाण सिद्धांत एक स्वयंसिद्ध सिद्धांत है। क्योंकि यह बताता है कि वस्तुओं व सेवाओं के लिए भुगतान की गई कुल मात्रा (MV+M'V') निश्चय ही उनके मूल्य PT के बराबर होगी। पर यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती कि मुद्रा की मात्रा में कुछ % परिवर्तन के फलस्वरूप कीमत स्तर में उतने ही % परिवर्तन होगा।

(2) अवास्तविक मान्यताएँ (Unrealistic assumptions) → फिशर का सिद्धांत कई अवास्तविक मान्यताओं पर based है। जैसे →

(a) आलोचकों के अनुसार V एवं T में केवल दीर्घकाल में ही नहीं वरन अल्पकाल में भी परिवर्तन होता है तथा इनका प्रभाव Price level पर भी पड़ता है। तेजी के समय मुद्रा का भ्रमण प्रवाह बढ़ जाता है तथा मंदी के समय घट जाता है। T में भी इसी तरह परिवर्तन होते रहता है। मंहगी के समय औद्योगिक क्रियाशीलता बढ़ जाती है जिससे लेन-देन के परिमाण में वृद्धि होती है तथा मंदी के समय औद्योगिक क्रियाशीलता में कमी होने के कारण भी इसमें कमी आ जाती है।

(b) परिमाण सिद्धांत की दूसरी मान्यता यह है कि M, V एवं T, तीनों स्वतंत्र हैं, यानि एक का दूसरे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है लेकिन यह मान्यता भी दोषपूर्ण है। क्योंकि यदि 'M' को बढ़ा दिया जाए तो V एवं T अवश्य ही प्रभावित होंगे।

अतः यह मान्यता भी गलत है कि M, V एवं T तीनों स्वतंत्र इकाइयाँ हैं।

(3) स्थैतिक विभिन्न काल से संबद्ध → फिशर के M और V को गुणा करने की भी आलोचना इसलिए की है कि M का संबंध निश्चित समय से है और V का संबंध समयावधि से है। इनमें पहली भौतिक धारणा और दूसरी गत्यात्मक धारणा है। इसलिए 2 अतुलनीय घटकों का गुणा करना तकनीकी दृष्टि से अनुचित है।

(4) मुद्रा का मूल्य मापने में असमर्थ → फिशर का समीकरण मुद्रा की क्रय-शक्ति को नहीं मापता, केवल व्यावसायिक सौदों की मात्रा मापता है। लेकिन मुद्रा की क्रय शक्ति/मूल्य का संबंध इन सौदों से है जो उपभोगीय वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय के लिए हों। अतः यह सिद्धांत मुद्रा का मूल्य मापन में असमर्थ है।

(5) कीमत-स्तर में उतार-चढ़ाव क्यों → क्राउथर के अनुसार परिमाण सिद्धांत, इस बात की व्याख्या करने में असमर्थ है कि अल्पकाल में कीमत-स्तर में उतार-चढ़ाव क्यों आते हैं।

(6) कीमत-स्तर को अनुचित महत्व → यह सिद्धांत कीमत-स्तर का अनुचित महत्व देता है। जैसे किसी आर्थिक प्रणाली में कीमतों में परिवर्तन ही सर्वाधिक क्रांति तथा महत्वपूर्ण हो।

(7) मुद्रा के संचलन वेग को मापना कठिन है → फिशर के समीकरण में मुद्रा तथा साख के संचलन वेग को सही-2 माप करना कठिन ही नहीं वरन लगभग असंभव है।

(7) ब्याज दर की उपेक्षा → यह सिद्धांत मुद्रा व कीमतों में कारण-प्रभाव कारकों के रूप में ब्याज की दर की भूमिका की उपेक्षा करता है।

(8) यह पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता पर आधारित है।

(9) आलोचकों के अनुसार V स्थिर नहीं है।

(10) यह सिद्धांत मुद्रा के मूल्य संचय कार्य की उपेक्षा करता और केवल मुद्रा के विनिमय फलन पर ध्यान देता है।

(11) आलोचकों के अनुसार मुद्रा की मात्रा व कीमत-स्तर के बीच प्रत्यक्ष व समानुपाती संबंध नहीं होता है। बल्कि ब्याज की दर तथा उत्पादन की स्तर के माध्यम से अप्रत्यक्ष संबंध होता है।

(12) यह सिद्धांत वास्तविक शेष प्रभाव की उपेक्षा करता है।

(13) यह व्यापार चक्र की व्याख्या में विफल है।

(14) यह सिद्धांत मूल्य-स्तर (P) की व्याख्या को स्पष्ट नहीं करता है। यह इतना जटिल है कि इसका निश्चयात्मक ज्ञान नहीं हो सकता।

वस्तुतः उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद यह सिद्धांत पूर्णतः तथ्यहीन नहीं कहा जा सकता। मुद्रा की मात्रा तथा कीमत स्तर में भले ही प्रत्यक्ष समानुपातिक संबंध न हो परंतु यह स्वीकार करना होगा कि मुद्रा की मात्रा का कीमत-स्तर पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य रहता है।

Scanned with CamScanner